

कम्बोडिया में गृह युद्ध भड़कने की आशंका

लगातार ३० साल गृहयुद्ध की त्रासदी झेलते दक्षिण-पूर्व एशियाई देश कम्बोडिया को काफ़ी जटिलता के बाद १९९३ में थोड़ी राहत मिली जब संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षकों की देखरेख में चुनाव हुए और मिली-जुली सरकार बन गई। सरकार में शामिल दोनों पक्ष तो एक दूसरे के प्रबल विरोधी थे, लेकिन चूंकि उन्हें चीन समर्थित शक्तिशाली ख्मेर रूज छापामारों से मिलकर लड़ना था, इसलिए साझा सरकार बनाने को राजी हो गये। प्रधानमंत्री के दो पद बनाए गये - एक पद मिला वियतनाम समर्थित कम्युनिस्ट पार्टी के नेता हुन सेन को और दूसरा मिला कम्बोडिया के सबसे पुराने शासक राजकुमार नरोत्तम सिंहनुक के पुत्र राजकुमार रणरिद्ध को। बाकी मंत्रियों के पदों में हुन सेन की पीपुल्स पार्टी और सिंहनुक की फन्सीनैक को बराबर की हिस्सेदारी दी गई। लेकिन सरकार के गठन के ही समय जो असंतोष उभरकर सामने आया वह खत्म होने के बजाए बढ़ते-बढ़ते आज इस स्थिति में आ गया है कि फिर से गृह युद्ध का माहौल बन गया है।

सरकार में शामिल दोनों पक्षों के बीच बढ़ता तनाव जल्द ही वो दिन लाने वाला है, जिससे उबारने की कोशिश १९९३ में की गई थी। श्री हुनसेन को रणरिद्ध के समर्थकों द्वारा तख्ता पटल करके उनकी पार्टी को सत्ता से अलग करने का षडयंत्र किये जाने की आशंका है। उन्होंने पार्टी के लोगों को सावधान रहने को कह दिया गया है और राजकुमार रणरिद्ध को भी चेतावनी दे दी गई है कि इस तरह की किसी योजना की गंध मिलते ही सेना कमान संभाल लेगी। रक्षा और अंतरिम सुरक्षा मंत्रालय भी अपने जिम्मे होने के कारण हुन सेन की सरकार

में पकड़ काफ़ी मजबूत है। राजकुमार रणरिद्ध का कहना है कि वे तो कहने भरके लिए प्रधानमंत्री हैं, वास्तव में उनके हाथ में है कुछ नहीं। उनका आरोप है कि शीर्ष मंत्रालय हुनसेन ने अपने पास रखा है और यह मुद्दा १९९३ में ही उन्होंने उठाया था, जब संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षक मौजूद थे। रणरिद्ध के मुताबिक संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षकों ने यह कह कर टाल दिया कि इसका हल आपसी राय-मशविरा से निकाला जाए, लेकिन आज तक हुनसेन ने सत्ता में उनकी हिस्सेदारी नहीं होने दी, न ही किसी महत्वपूर्ण मंत्रालय अपनी पार्टी के लोगों को सौंपा है और उनकी

ली और १९७५ में पोल पोट द्वारा अपदस्थ किये जाने के बाद राजकुमार नरोत्तम सिंहनुक के नजदीकी संबंधियों ने भी थाईलैंड भागकर अपनी जान बचाई थी। उसके बाद ख्मेर छापामारों के लिए चीन से हथियारों की आपूर्ति थाईलैंड के जरिये होती रही जो आज भी बदस्तूर कायम है।

उधर ७३ वर्षीय राजकुमार सिंहनुक की तबियत बिगड़ती जा रही है। वे अब अपने देश के लिए कुछ करने की स्थिति में नहीं हैं, इससे उनकी पार्टी के लोगों का चिंतित होना स्वाभाविक है। क्योंकि श्री सिंहनुक को कम्बोडिया में अनुकूल स्थिति होने के प्रयासों में अपने व्यक्तित्व की

उधर ७३ वर्षीय राजकुमार सिंहनुक की तबियत बिगड़ती जा रही है। वे अब अपने देश के लिए कुछ करने की स्थिति में नहीं हैं, इससे उनकी पार्टी के लोगों का चिंतित होना स्वाभाविक है। 'क्योंकि श्री सिंहनुक को कम्बोडिया में अनुकूल स्थिति होने के प्रयासों में अपने व्यक्तित्व की बदौलत भरपूर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग मिला।

पार्टी के मंत्रियों की संख्या भी ज्यादा है। पन्सीरेक को कहने भर के लिए प्रतिनिधित्व दिया गया है। कम्बोडिया के सबसे निकटस्थ पड़ोसी थाईलैंड के अखबार 'बैंकाक टाइम्स' ने दोनों पक्षों के अत्यंत विश्वसनीय सूत्रों के हवाले से यह वृत्तान्त छपा है। थाईलैंड की कम्बोडिया के अंदरूनी मामले में दलखअंदाजी रही है। १९८७ के दिसम्बर में जब वियतनामी सेना की बदौलत हुन सेन के ख्मेर रूज शासक पोल पोट को अपदस्थ किया तो पोल पोट ने थाईलैंड में शरण

बदौलत भरपूर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग मिला। स्वतंत्र विचारधारा का कम्बोडिया का सर्वाधिक प्रचारित पुत्र 'जाम्पेन्ह पोस्ट' के मुताबिक अंतिम समय में अपने देश को फिर से पहले वाली हालत में जाते देख सिंहनुक की तकलीफ और बढ़ती जा रही है। क्योंकि ख्मेर रूज ने दक्षिण कम्बोडिया और अपने प्रभाव वाले अन्य इलाकों में पुलिस व सैनिक ठिकानों पर हमले तेज कर दिये हैं।

इस बीच पोल पोट की मृत्यु की खबर से ख्मेर छापामारों का मनोबल कमजोर अवश्य

हुआ, लेकिन एक कमांडर द्वारा कम्बोडिया सरकार की ओर से उड़ाई गई अफवाह बताकर खंडन किये जाने से छापामार पुनः अपने अभियान में जुट गये हैं। १९९३ से पहले जब पूरी तरह वियतनामी सेना की बदौलत हुन सेन के नेतृत्व में सरकार चल रही थी, तब भी सरकारी सैनिकों के लिए ख्मेर रूज हमलों का करारा जवाब देना मंहगा पड़ता था और उस स्थिति में आज भी कोई अंतर नहीं पड़ा है।

शीत युद्ध के दौरान अमरीका और सोवियत संघ ने अपना वर्चस्व कायम करने की लड़ाई में जिन देशों को मोहरा बनाया उसमें एक कम्बोडिया भी है। वियतनाम की शर्मनाक हार के बाद अमरीका ने अपने को इस क्षेत्र की राजनीति से अलग कर लिया और उसके बाद मामूला सोवियत संघ और चीन के बीच रह गया। चीन का हस्तक्षेप बिल्कुल सीधा रहा और सोवियत संघ की तूती वियतनाम के जरिए कायम रही। सोवियत संघ के बिखर जाने के बावजूद कम्बोडिया में दबंग हैसियत कम्युनिस्टों की ही है।

दरअलस १९७९ में ख्मेर रूज शासन के पतन के बाद से कम्बोडिया में चीन की एक नहीं चल पायी, जबकि चीनी शासकों ने राजकुमार सिंहनुक के भी बड़े शुभचिंतक होने का स्वांग रचा, क्योंकि श्री सिंहनुक की अंतर्राष्ट्रीय छवि अच्छी रही है और उन्हें राष्ट्राध्यक्ष बनाने पर किसी देश को आपत्ति नहीं होती तथा उसी बहाने १९७५ की तरह फिर से ख्मेर रूज राजकुमार सिंहनुक की कमजोरी का फायदा उठा कर कम्बोडिया पर कब्जा कर लेता। १९७५ से १९७८ तक का ख्मेर रूज शासनकाल का इतिहास खून से रंगा है।

□ शशिधर खां